International Journal of Applied Research 2020; 6(3): 139-142

**ISSN Print:** 2394-7500
**ISSN Online:** 2394-5869
**Impact Factor:** 5.2
IJAR 2020; 6(3): 139-142
www.allresearchjournal.com
Received: 15-01-2020
Accepted: 18-02-2020

**Dr. Ajay Krishan Tiwari**
Teacher Educator & Research Guide, Sr.Lecturer, CTE / BTTC - G.V.M & Former H.O.D Department of Education- IASE Deemed to be University, Sardarshahar, Rajasthan, India

**Corresponding Author:**
**Dr. Ajay Krishan Tiwari**
Teacher Educator & Research Guide, Sr.Lecturer, CTE / BTTC - G.V.M & Former H.O.D Department of Education- IASE Deemed to be University, Sardarshahar, Rajasthan, India

# चेतना विकास मूल्य शिक्षा का किशोर विद्यार्थियों के कृतित्व विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

**Dr. Ajay Krishan Tiwari**

## 1. प्रस्तावना

आदि काल से ही मनुष्य सुखी होने के लिए प्रयासरत रहा है। फलतः सुख प्राप्ति के विभिन्न पथ अथवा विधाओं को मनुष्य ने शोध किया और परखा। प्रत्येक विधा का आधार कोई धर्म, दर्शन, अथवा विचारधारा रही। यह इसलिए क्योंकि किसी भी विद्या के मूल में वास्तविकता की, अर्थात् जो कुछ भी है उसकी, एक समझ आवश्यक है। यह समझ ही उस विधा को तार्किक एवं तात्विक आधार प्रदान करती है। हर विधा मूलतः, सुख को किसी रूप में पहचान कर, उस सुख की प्राप्ति के लिए कोई जीवन शैली निर्धारित करती है। अनगिनत प्रयासों के बावजूद इक्कीसवीं शताब्दी की षुरूआत तक मानव जाति के सुख की प्राप्ति के लिए कोई सार्वभौम, सर्वसुलभ एवं सुनिश्चित विधा के प्रमाण नहीं मिलते। परन्तु सुख प्राप्ति मनुष्य की अनिवार्यता होनेवश इस पर अनुसंधानों की श्रृंखला रूक भी नहीं सकती। इसी क्रम में, मानव के सुख प्राप्ति के आशय पूर्ति के लिए 'मध्यस्थ दर्शन' एक अभिनव प्रस्ताव है। मध्यस्थ दर्शन, रहस्य, गुरूवाद और साम्प्रदायवाद से मुक्त, एक अत्यंत सुगम एवं व्यावहारिक प्रस्ताव है। मध्यस्थ दर्शन, अमरकण्टक (मध्य प्रदेश) के निवासी श्री ए. नागराज शर्मा का अनुसंधान है। एक साधारण गृहस्थ का जीवन व्यतीत करते हुए, उनकी समस्त ऊजा इस दर्शन को मानव जाति के लिए सर्वसुलभ करने में समर्पित है। मध्यस्थ दर्शन के अनुसार संपूर्ण अस्तित्व एक सप्रयोजन व्यवस्था है। यह व्यवस्था सहअस्तित्व रूपी है अर्थात् अस्तित्व में हर इकाई अन्य सभी इकाइयों के लिए परस्पर पूरक एवं उपयोगी है। मनुष्य का परस्पर पूरक एवं उपयोगी होना, मनुष्य द्वारा इस व्यवस्था को समझने के उपरान्त ही हो पाता है। इस व्यवस्था को समझ कर जी पाना ही मनुष्य के सुखी होने का एकमात्र मार्ग भी है।[1]

संपूर्ण अस्तित्व एक सप्रयोजन व्यवस्था है। अर्थात् सभी वास्तविकताएँ, क्रियायें, अंतरसंबंध और इनके फलस्वरूप सभी यथास्थितियों का प्रकटन अस्तित्व सहज प्रयोजन के अर्थ में नियमित एवं निश्चित है। संपूर्ण अस्तित्व को समझा जा सकता है। अस्तित्व में, अस्तित्व को समझते योग्य इकाई मानव ही है। समझने के लिए एकमात्र अर्हता मानव स्वरूप ही है अर्थात् अस्तित्व प्रत्येक मानव के लिए बोधगम्य है। साथ ही, मानव द्वारा वांछित एवं अनिवार्य अध्ययन की संपूर्ण वस्तु भी अस्तित्व समग्र ही है। इससे कम और ज्यादा की सभी कल्पनाएँ भ्रम हैं, अर्थात् अपूर्ण हैं, असत्य है। संपूर्ण व्यवस्था को समझने के उपरान्त अस्तित्व का रहस्य और चमत्कार से मुक्त होना स्वतः सिद्ध होता है। इस लेख में कई जगह 'अस्तित्व सहज व्यवस्था' वाक्यांश का प्रयोग है : इससे तात्पर्य अस्तित्व में निहित व्यवस्था से है। यह व्यवस्था किसी मानव ने बनायी नहीं है, अथवा मानवों को बनानी नहीं है। यह है। मानव को इसे समझना मात्र है।[2]

### 1.1 परिवार की उपयोगिता अर्थात् परिवार क्यों?

मानव ही परिवार का गठन करता है अथवा परिवार बनाता है, परिवार में रहना पसंद करता है। मानव के अध्ययन में यह ज्ञात होता है कि मानव जीवन एवं शरीर का सहअस्तित्व है। जीवन ही अपने लक्ष्य पूर्ति के लिए मानव शरीर स्वीकारता है। जीवन का लक्ष्य, "संपूर्ण को समझकर, सही समझ को जीकर, निरंतर सुखी होना" है। संपूर्ण को समझाने के लिए जीवन को शरीर चाहिए। उसके उपरांत, हर मानव संतान को समाधानित लोगों का सानिध्य चाहिए। इस सानिध्य इसकी समझ पूर्ण होते है। समझपूर्णता के उपरान्त सही समझ के प्रमाण प्रस्तुत करना अर्थात् स्वयं में समाधानित, परिवार में मूल्यमयता एवं परिवार समृद्धि में योगदान, अखंड समाज एवं सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी निर्वाह भी प्रत्येक जीवन की सहज आवश्यकता है। यही निरंतर सुख की स्थिति है।

[1] ए. नागराज (2004) "मानव व्यवहार दर्षन", जीवन विद्या प्रकाषन अमरकंटक, श्री भजन आश्रम अमरकंटक
[2] ए. नागराज (2004) "मानव व्यवहार दर्षन", जीवन विद्या प्रकाषन अमरकंटक, श्री भजन आश्रम अमरकंटक पृ. सं. 48

यही मानव लक्ष्य है। फलतः परिवार की उपयोगिता जीवन लक्ष्य एवं मानव लक्ष्य की पूर्ति के अर्थ में है।

आवश्यकता की पूर्ति के लिए उत्पादन, न कि लाभ या प्रलोभन के आशय से उत्पादन। यह पक्ष मानव के अध्ययन से प्रत्यक्ष ताल्लुकात रखता है। मानव में जब मूल्यों और लक्ष्य की समझ विकसित हो पाती है, तभी लाभोन्माद से मुक्त जीने की शैली में प्रवृत होता है। क्योंकि लोभोन्माद, भागोन्माद तृप्ति पाने के प्रयास ही हैं। तृप्ति के सही स्त्रोतों का पता लगता है, उनको हम अपने जीने में उतार पाते हैं तभी इस प्रकार के प्रयासों की आवश्यकता एवं प्रवृति खत्म होती है। किन वस्तुओं का उत्पादन हो, कितनी मात्रा में हो, कैसे हो, जैसे महत्वपूर्ण प्रश्नों के व्यवस्थाकारक जवाब हो पाते हैं।

### 1.2 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व :

प्रत्येक व्यक्ति की यह आन्तरिक प्रेरणा व कामना होती है कि वह सर्वसुख प्राप्त करे और उसी को वह अपने जीवन की लक्ष्यपूर्ति भी समझता है। इसी लक्ष्यपूर्ति के लिए शिक्षा अनिवार्य है जो न केवल भौतिक वातावरण की आवश्यकता व मांग है, बल्कि सामाजिक वातावरण के साथ समायोजन करने के लिए भी आवश्यक है। मनुष्य का परिवेश बहुविध और विस्तृत होने के कारण उसे दीर्धकालिक शिक्षा की आवश्यकता बनी रहती है। इस तरह शिक्षा हर काल, हर परिस्थिति और हर स्थान में अपना औचित्य एवं प्रभाव निरूपित करती आई है, उसके महत्व और अनिवार्यता से कोई भी इंकार नही कर पाया है। परंतु यह भी देखा जा रहा है कि शिक्षा का इतना महत्व होने के बाद भी ज्यों ज्यों शिक्षा का फैलाव हो रहा है,जीने की समस्या में भी वृद्धि हो रही है अर्थात शिक्षा समाधानकारक न बनकर समस्यामूलक बनती जा रही है।[3]

वर्तमान शिक्षा में मूल्य शिक्षा की कमियों को स्वीकार कर विगत दो दशकों से इसमें आमूल परिवर्तन की आवश्यकता की बात को अनेक विद्वानों, विचारकों एवं राजनेताओं ने उठाया है। चूंकि अब तक कोई विचारणीय, अनुकरणीय तथा स्वीकार्य विकल्प प्रस्तुत न हो सका इसलिए वर्तमान शिक्षा को अपनाना लोगों की मजबूरी है।

अतः ऐसी पद्धति की आवश्यकता है जिससे परिवार से लेकर विश्व परिवार तक मानव विश्वासपूर्वक जी सके । ऐसी ही शिक्षा को मानवीय अथवा ''चेतना विकास मूल्य शिक्षा'' कहा गया है। यह मध्यस्थ–दर्शन (सह–अस्तित्ववाद) से निःसृत है। इसके प्रणेता ए. नागराज जी (अमरकंटक) है।

सामान्यतः मूल्यपरक शिक्षा से अभिप्राय उस शिक्षा से है, जिसमें हमारे नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक मूल्य समाहित हैं। इसमें विभिन्न विशयों को मूल्य परक बनाकर उनके माध्यम से विभिन्न मूल्यों को छात्रों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व में समाहित करने पर बल दिया जाता है, जिससे उनका सन्तुलित एवं सर्वतोन्मुखी विकास हो सके।

### 1.3 अध्ययन का औचित्य

कृतित्व अर्थात आचरण या मानव की भागीदारी इन्टरनेट पर उपलब्ध शब्द कोश रफतार में इसका अर्थ "किसी कृति अथवा रचना का गुण, धर्म, या भाव" बताया गया है। इस दृश्टि से भी कृतित्व जीवन का व्यवहारिक पक्ष ही प्रतीत होता है। कृतित्व शब्द संस्कृत में कृतिः व "त्व" प्रत्यय के संयोग से निर्मित है। संस्कृत में कृति का अर्थ करना से लिया गया है। और त्व प्रत्यय का प्रयोग भाव बताने के लिए होता है। इस प्रकार कृतित्व शब्द किये गये कार्य के भाव को प्रकट करता है। कृतित्व– मानव ही अस्तित्व समग्र में समझते योग्य इकाई है। 1929 हर्टांग समिति ने इस बात की आवश्यकता अनुभव की कि भारतीय विद्यालयों में धार्मिक निर्देशों की शिक्षा दी जानी चाहिए। 1937 में महात्मा गांधी ने वर्धा में प्रथम भारतीय शिक्षा सम्मेलन बुलाया। इस सम्मेलन ने शिक्षा में मानवीय मूल्यों की शिक्षा को स्वीकार किया। डॉ. जाकिर हुसैन समिति ने भी इस बात की आवश्यकता अनुभव की कि शिक्षा का पाठ्यक्रम ऐसा बनाया जाये, जो छात्रों में आदर्श नागरिकता, शारीरिक श्रम के प्रति सम्मान तथा सामुदायिक कार्यों में सहभागिता आदि गुणों को विकसित कर सके।

**विश्वविद्यालय स्तर पर :**

1. डिग्री (विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम) कोर्स के प्रथम वर्श में बुद्ध, जोरेस्टर, सुकरात, ईसा, शंकर, रामानुज, माधव, मोहम्मद, कबीर, नानक तथा गाँधी आदि महान् महापुरूशों की जीवनियाँ आदि पढ़ायी जायें।
2. द्वितीय वर्ष में संसार के धार्मिक ग्रंथों में से सार्वभौमिक महत्व के चुने हुए भागों को पढायी जायें।
3. तृतीय वर्ष में दर्शन की मुख्य समस्याओं का अध्ययन कराया जाये।

भारत सरकार ने अगस्त 1959 में श्रीप्रकाश की अध्यक्षता में धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा समिति (Committee on Religious and Moral Instruction) की नियुक्ति की । इस समिति ने जनवरी 1960 में अपनी रिपोर्ट सरकार के समक्ष प्रस्तुत की और उसमें धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा की विशय–सामग्री के संबंध में विचार व्यक्त किये– प्राथमिक से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक के लिए समिति ने मूल्य शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने का सुझाव दिया।

1964 में प्रोफेसर डी.एस. कोठारी की अध्यक्षता में नियुक्त किये जाने वाले 'शिक्षा आयोग' ने धार्मिक और नैतिक शिक्षा की विशय– सामग्री के संबंध में अधोलिखित सुझाव दिये –

**विद्यालय स्तर** :

1. छात्रों को आधारभूत नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा दी जाय, यथा – सत्यता, ईमानदारी, सामाजिक, उत्तरदायित्व, पशुओं पर दया, वयोवृद्ध लोगों के प्रति सम्मान एवं दुखी और दरिद्रों के प्रति सहानुभूति इत्यादि।
2. उक्त सभी मूल्यों को विद्यालय के कार्यक्रम का अभिन्न अंग बनाया जाये।
3. विद्यालय के पाठ्यक्रमों में संसार के सभी धर्मों को उचित स्थान दिया जाये।
4. सम्पूर्ण देश के लिए समान पाठ्यक्रम की समान पुस्तक को राश्ट्रीय स्तर पर धर्म के विद्वानों द्वारा तैयार करवाया जाये।
5. इस प्रकार निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि बालकों के लिए यह अध्ययन बहुत आवश्यक और महत्वपूर्ण है। क्योंकि बालक के लिए यह आवश्यक है कि उन्हें सामाजिक मूल्यों का ज्ञान हो।

### 1.4 अध्ययन के उददेश्य :

1. किशोर विद्यार्थियों के कृतित्व विकास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभावों का अध्ययन करना।
2. चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के कृतित्व विकास का तुलनात्मक अध्ययन करना।

### 1.5 परिकल्पनायें :

1. किशोर विद्यार्थियों के कृतित्व विकास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

[3] ए. नागराज (2004) "मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान'' जीवन विद्या प्रकाषन अमरकंटक, श्री भजन आश्रम अमरकंटक पृ. सं. 36

2. चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के कृतित्व विकास में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

### 1.6 शोध विधि (Mathods of the Study)-

समस्या की प्रकृति व पृष्ठभूमि को देखते हुए प्रस्तुत समस्या के अध्ययन के लिए अनुसंधान का स्वरूप ''प्रयोगात्मक अनुसंधान'' Experimental research निश्चित किया गया है।

### 1.7 न्यादर्श (Sampling)-

प्रस्तुत शोध कार्य में मीरां निकेतन उच्च माध्यमिक विद्यालय, गाँधी विद्या मंदिर, सरदारशहर की कक्षा नवीं के साठ छात्राओं तक ही सीमित रखा गया है। जिसमें तीस छात्राएँ नियंत्रित–समूह के अन्तरगत तथा तीस छात्राएँ प्रयोगात्मक –समूह के रूप में चिन्हित किये गये है।

1. यादृच्छिक विधि से न्यादर्श का चयन।
2. नियंत्रित व प्रायोगिक समूहों का निर्धारण

### 1.8 शोध कार्य में प्रयुक्त उपकरण..

1. **कृतित्व परख प्रश्नावली – स्वनिर्मित।**

### 1.9 अनुसंधान में प्रयुक्त सांख्यिकी –

प्रस्तुत प्रयोगात्मक अध्ययन में पूर्व व पश्च परीक्षणों की दृश्टि से विश्लेशण हेतु सांख्यिकी–उपकरण के रूप में मध्यमान (Mean)] मानक विचलन (S.D.), प्रतिशतता (Precentage) व 'टी' मान ("T" Test) का प्रयोग किया जाएगा।

2 दत्तों का सारणीयन एवं विश्लेशण (Analysis and Tabulation of Data).

1 परिकल्पना संख्या – 1 – किशोर विद्यार्थियों के कृतित्व विकास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

**सारणी संख्या 1:** किशोर विद्यार्थियों के कृतित्व विकास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव की प्रतिशतता व स्तर

| नियंत्रित समूह के किशोर विद्यार्थी | | | | |
|---|---|---|---|---|
| प्राप्तांक | कुल संख्या | **वर्गवार संख्या** | प्रतिशत | वर्गीकरण |
| 75 व अधिक | 30 | 6 | 20.00 | उच्च स्तरीय |
| 55 से 74 | | 16 | 53.33 | मध्यम स्तरीय |
| 54 व इससे कम | | 8 | 26.67 | निम्न स्तरीय |
| **प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थी** | | | | |
| 75 व अधिक | 30 | 5 | 16.67 | उच्च स्तरीय |
| 55 से 74 | | 23 | 76.67 | मध्यम स्तरीय |
| 54 व इससे कम | | 2 | 6.67 | निम्न स्तरीय |

(MEAN+SD) (MEAN-SD)

3 **विश्लेशण :** उक्त तालिका में किशोर विद्यार्थियों के कृतित्व विकास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव की स्थिति के आधार पर नियंत्रित व प्रायोगिक समूह को तीन श्रेणीयों में बांटा गया, चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव की उच्च स्थिति, मध्यम स्थिति व निम्न स्थिति।

4 तालिका में कुल 30 नियंत्रित समूह के किशोर विद्यार्थियों में से उच्च स्थिति, मध्यम स्थिति व निम्न स्थिति वाले किशोर विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 6, 16 व 8 पायी गयी जो कि कुल की क्रमशः 20.00, 53.33 व 26.67 प्रतिशत है। तथा कुल 30 प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थियों में से उच्च स्थिति, मध्यम स्थिति व निम्न स्थिति वाले किशोर विद्यार्थियों की संख्या क्रमशः 5, 23 व 2 पायी गयी जो कि कुल की क्रमशः 16.67, 76.67 व 6.67 प्रतिशत है। गणना द्वारा प्राप्त नियंत्रित व प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थियों के प्रतिशत के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थियों के कृतित्व विकास पर का स्तर उच्च हुआ है। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि नियंत्रित व प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थियों के प्रतिशत के आधार पर कहा जा सकता है कि मध्यम व निम्न स्थिति वाले किशोर विद्यार्थियों के कृतित्व विकास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रभाव पड़ता है। जबकि उच्च स्थिति वाले किशोर विद्यार्थियों के कृतित्व विकास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा का कोई प्रभाव नहीं देखा गया है।

**परिकल्पना संख्या – 2: चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के कृतित्व विकास में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।**

**सारणी संख्या – 2** चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के कृतित्व विकास के मध्यमान के अन्तर की गणना।

| **किशोर विद्यार्थी** | संख्या (N) | मध्यमान (M) | प्रमाप विचलन (σ) | टी मान (t) | सार्थकता स्तर | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | 0.05 | 0.01 |
| चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले | 30 | 65.77 | 8.56 | 0.90 | सार्थक अन्तर नहीं है। | सार्थक अन्तर नहीं है। |
| चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग न लेने वाले | 30 | 63.50 | 10.82 | | | |

(df = $N_1+N_2-2=30+30-2=58$)

5 **व्याख्याः** उक्त सारणी में चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के कृतित्व विकास के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 15.13 एवं 13.57 तथा मानक विचलनों का मान क्रमशः 3.40 एवं 2.58 प्राप्त हुए हैं। इन मानों के आधार पर दोनों समूहों के मध्य टी मान (T Value) 2.01 प्राप्त हुआ है। टी मान सारणी में स्वतंत्रता के अंश 58(df) स्वतंत्रता के अंश पर 0.05 सार्थकता स्तर पर 2.00 एवं 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.66 दिया गया है। गणना द्वारा प्राप्त टी मान 0.05 सार्थकता स्तर से उच्च व 0.01 सार्थकता स्तर से निम्न है। अतः यहाँ पर निर्धारित शून्य परिकल्पना को सार्थकता के 0.05 स्तर पर स्वीकृत किया जाता है। तथा निष्कर्ष के रूप में कहा जा

सकता है कि चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के कृतित्व विकास में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। प्राप्त मध्यमानों के आधार पर कहा जा सकता है कि चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के कृतित्व विकास का स्तर भाग ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के कृतित्व विकास की अपेक्षा उच्च पाया गया।

## 2.11 शोध की सम्प्राप्तियाँ एवं निष्कर्ष (Findings & Conclusion) .

**परिकल्पना संख्या – 1: किशोर विद्यार्थियों के कृतित्व विकास पर चेतना विकास मूल्य शिक्षा का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।** को देखने हेतु सांख्यिकी गणनाओं के आधार पर परीक्षण किया गया, जिसमें प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थियों के कृतित्व विकास का स्तर नियंत्रित समूह के किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के स्तर की अपेक्षा अधिक पाया गया है।

**परिकल्पना संख्या – 2: चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के कृतित्व विकास में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।** को देखने हेतु सांख्यिकी गणनाओं के आधार पर परीक्षण किया गया, जिसमें गणना द्वारा प्राप्त टी मान 0.05 व 0.01 सार्थकता स्तर से निम्न है। अतः यहाँ पर निर्धारित शून्य परिकल्पना को सार्थकता के दोनों स्तरों पर स्वीकृत किया जाता है।

## निष्कर्ष

**परिकल्पना संख्या – 1:** चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव के चलते प्रायोगिक समूह के किशोर विद्यार्थियों के कृतित्व विकास के स्वरूप व स्तर को लेकर विकास हुआ, अर्थात उनके स्तर में वृद्धि हुई अर्थात् वे निम्न से मध्यम या उच्च तथा मध्यम से उच्च स्तर में परिवर्तित हो गये। इस प्रकार चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रभाव से किशोर विद्यार्थियों के कृतित्व विकास का स्तर उच्च हुआ है।

**परिकल्पना संख्या – 2:** चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले एवं ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के कृतित्व विकास में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। प्राप्त मध्यमानों के आधार पर कहा जा सकता है कि चेतना विकास मूल्य शिक्षा कार्यक्रम में भाग लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के कृतित्व विकास का स्तर भाग ना लेने वाले किशोर विद्यार्थियों के कृतित्व विकास की अपेक्षा उच्च पाया गया।

## 3. संदर्भ


1. "प्रारंभिक सामाजिक अनुसंधान, आर्य, डॉ.एस.पी. (1986) साहित्य भवन आगरा"
2. "विभाग में शिक्षानुसंधान", ओमप्रकाश व्यास(1997), माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, राजस्थान बीकानेर
3. "शिक्षा मनोविज्ञान व सांख्यिकी के आधार, अरोड़ा, रीता व मारवाह(2001),23 चौड़ा रास्ता, जयपुर
4. "जीवन विद्या एक परिचय",ए. नागराज(2004), जीवन विद्या प्रकाशन अमरकंटक, श्री भजन आश्रम अमरकंटक
5. "जीवन विद्या एक परिचय", ए. नागराज (2004), जीवन विद्या प्रकाशन अमरकंटक, श्री भजन आश्रम अमरकंटक
6. "समाधानात्मक भौतिकवाद", ए. नागराज(2004), जीवन विद्या प्रकाशन अमरकंटक, श्री भजन आश्रम अमरकंटक
7. "अनुभव दर्शन", ए. नागराज (2004), जीवन विद्या प्रकाशन अमरकंटक, श्री भजन आश्रम अमरकंटक
8. "अनुभवात्मक अध्यात्मवाद", ए. नागराज(2004), जीवन विद्या प्रकाशन अमरकंटक, श्री भजन आश्रम अमरकंटक
9. "मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान, ए. नागराज(2004), जीवन विद्या प्रकाशन अमरकंटक, श्री भजन आश्रम अमरकंटक
10. "मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान, ए. नागराज(2004), जीवन विद्या प्रकाशन अमरकंटक, श्री भजन आश्रम अमरकंटक
11. "अनुसंधान विधियाँ" कपिल, एच.के. (2007)एच.पी. भार्गव बुक हाउस 4/230, कचहरी घाट. आगरा